शोध पत्र- अर्थशास्त्र

जैन धर्म के दस लक्षणों का आर्थिक प्रभाव

* संगीता जैन

* प्रवक्ता, अर्थशास्त्र विभाग, अग्रवाल महाविद्यालय, जयपुर

December, 2011

धर्म को सर्वजन सुलभ व विश्व व्यापी बनाकर उसे विश्व की सम्पूर्ण मानवता का हितकर बनाने के उद्देश्य से धर्म के दशलक्षण स्वीकार किये गये हैं। जैन धर्म में भी रागद्वेष रूप दुर्भावों से दूषित करने वाली मानसिक अवस्था का उपशमन करने के लिये दशधर्मों का विधान किया गया है। दशधर्म हैं – उत्तमक्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, अकिंचन्य और ब्रह्मचर्य।

1. उत्तम क्षमा

शत्रुओं के कुवचन आदि के द्वारा कलुषता के कारण रहते हुए भी कलुषता उत्पन्न नहीं होना क्षमा धर्म है। क्रोधोत्पादक गाली–गलौच, मारपीट, अपमान आदि परिस्थितियों में भी मन को कलुषित न होने देना क्षमा धर्म है अर्थात् क्रोध सह लेने के सामर्थ्य को क्षमा कहते हैं। क्षमा का भाव रखने से मालिक व नियोक्ता के मध्य सद्भावपूर्ण सम्बन्ध बने रहते हैं जिससे छोटी–छोटी बातों से उत्पन्न होने वाले तनावों का लोप हो जाता है। इसका प्रभाव व्यक्ति की कार्यक्षमता पर भी पड़ता है।

जिन उद्योगों एवं संस्थानों के प्रबन्धकों में क्षमा का भाव होता है वहाँ अक्सर कर्मचारियों की उत्पादन क्षमता अधिक होती है तथा संस्थान व उद्योग भी अधिक लाभ की स्थिति में होते हैं। इस प्रकार क्षमा का अत्यधिक आर्थिक प्रभाव पड़ता है। जैन धर्म में क्षमा भाव का विस्तृत वर्णन पढ़ने को मिलता है। यदि एक राजा दूसरे राजा की छोटी गलती पर क्षमा का भाव रखते हुए उस पर आक्रमण नहीं करता तो युद्ध की वज़ह से करोडों रुपये की सम्पदा और अमूल्य जानें नष्ट होने से बच जाती हैं।

2. मार्दव

जाति आदि आठ प्रकार के अहंकार भाव के दर्प भाव का नाश होना मार्दव धर्म है। कुल, जाति, रूप, ज्ञान, तप, वैभव, प्रभुत्व एवं शील आदि सम्बन्धी अभिमान करना मद कहलाता है। इस मान कषाय को जीतकर मन में सदैव मृदुता रखना मार्दव धर्म है अर्थात् घमण्ड के अभाव का नाम मार्दव है।

इतिहास गवाह है कि जब–जब किसी राजा अथवा सामान्य जन ने घमण्ड किया तो उसके परिणामस्वरूप हुए युद्धों से अपार जन–धन की हानि हुई। रावण को जब अपनी शक्ति का घमण्ड हुआ तो उसका परिणाम आर्थिक दृष्टि से यह हुआ कि अत्यधिक उन्नत व सोने से बनी लंका पूरी तरह नष्ट भ्रष्ट हो गयी। यदि वर्तमान सन्दर्भ में देखें तो भी वही व्यवसायी अपने व्यवसाय में सफल रहते हैं जो अहंकारी नहीं होते। घमण्ड व आर्थिक उन्नति में नकारात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

3. आर्जव

अभिमान का निराकरण करना तथा योगों की कुटिलता का न होना आर्जव है। मन में एक बात सोचना, वचन से कुछ और कहना तथा शरीर से करना कुछ और यह कुटिलता या मायाचारी कहलाती है। इस माया कषाय को जीतकर मन–वचन–काय की क्रिया में एकरूपता रखना आर्जव धर्म है अर्थात् मायाचारी के अभाव का नाम आर्जव है।

मन, वचन व काय से एकरूप रहने वाले व्यवसायी ही आर्थिक रूप से सफल रहते हैं। जो व्यवसायी वचन से तो ग्राहक को सन्तुष्ट कर देते हैं परन्तु उनका मन व काय वैसा नहीं होता तो ग्राहक एक बार भले ही उनका माल खरीद ले परन्तु दुबारा उस दुकान पर लौट कर नहीं आता जिसका प्रभाव उसकी भविष्य की कमाई पर पड़ता है, उसकी साख गिर जाती है जिसका उसे आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है।

4. शौच

लोभ से सर्व प्रकार की निवृत्ति होना शौच धर्म है। मन को मलिन बनाने वाली जितनी दुर्भावनाएँ हैं उनमें लोभ सबसे प्रबल अनिष्टकारी है। इस लोभ कषाय को जीतकर मन को पवित्र बनाना शौच धर्म है अर्थात् लोभ के अभाव का नाम पवित्रता है और यही शौच धर्म है।

जैन धर्म के अनुसार यदि कोई व्यापारी लालच में आकर अत्यधिक लाभ कमाने की आशा से वस्तु का मूल्य ऊँचा रखता है, मिलावट करता है, अच्छा नमूना दिखाकर घटिया वस्तु बेचता है तो वह अपने बुरे कर्मो का संचय करता है जिसका परिणाम उसे भविष्य में मिलना निश्चित होता है। आजीविका उपार्जन के लिए एक निश्चित मात्रा में ही लाभ लिया जाना चाहिए।

5. सत्य

उत्तम सत्पुरुषों के साथ निर्दोष वचन बोलना सत्य धर्म है। असत्य की प्रवृत्ति को रोककर सदैव यथार्थ हित–मित–प्रिय वचन बोलना सत्य धर्म है। वास्तविकता प्रकट करना ही सत्य कहलाता है। देखा जाय तो आर्थिक उन्नति में भी सत्य का अत्यधिक महत्त्व होता है। प्राचीन काल से ही हमारे यहाँ राजा–महाराजाओं द्वारा सत्य बोलने वालों को ऊँचे पद दिये जाते थे एवं इस कारण वे आर्थिक रूप से उन्नत भी होते थे।

6. संयम

प्राणिघात तथा इन्द्रिय विषयों का परिहार करना संयम है। इन्द्रियों के विषयों की ओर से मन की प्रवृत्ति को रोककर

उसे सत् प्रवृत्तियों में लगाना संयम धर्म है।

जैन धर्म में संयम को भी महत्त्वपूर्ण धर्म माना गया है। यदि व्यक्ति अपनी इन्द्रियों को वश में नहीं रख सकता है तो वह व्यसनों में फँस जाता है जिसके परिणामस्वरूप उसे भारी आर्थिक हानि उठानी पड़ती है।

7. तप

कर्मों के क्षय करने के लिये जो अत्यधिक तपा जाता है वह तप माना गया है। विषयों व कषायों का निग्रह करके बारह प्रकार के तप में चित्त को लगाना तप धर्म है। तप को बहुत बड़ा धर्म कहा गया है। तप करने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है तथा रोगों पर होने वाला व्यय बचता है। तप करने से व्यक्ति की दक्षता व कार्यक्षमता भी बढ़ती है जिससे उत्पादन पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है, देश की राष्ट्रीय आय में बढ़ोतरी होती है तथा देश का विकास होता है।

8. त्याग

उत्तम धर्म तथा शास्त्र आदि का देना त्याग कहा गया है। बिना किसी प्रत्युपकार व स्वार्थ–भावना के दूसरों के हित व कल्याण के लिये विद्या आदि का दान देना त्याग धर्म है। यह चार प्रकार का बताया गया है। औषधि, शास्त्र, अभय और आहार आदि का दान देना भी त्याग धर्म ही है।

जैन धर्म में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि व्यक्ति जितना त्याग करता है उसे उतनी ही अधिक समृद्धि प्राप्त होती है। यदि वर्तमान संदर्भ में देखा जाय तो बिल गेट्स, लक्ष्मी नारायण मित्तल की कमाई का 50 से 75 प्रतिशत तक हिस्सा सामाजिक कल्याण हेतु व्यय किये जाने के बाद भी यदि उनकी गिनती विश्व के प्रमुख धनी व्यक्तियों में होती है तो वह स्थिति जैन धर्म में वर्णित इस तथ्य को ही प्रमाणित करते हैं कि दान देने से धन घटता नहीं है।

9. आकिंचन्य

अपने शरीरादिक की अपेक्षा न कर, ममता रहित प्रवृति आकिंचन्य है। घर–द्वार, धन–दौलत, बन्धु–बान्धव, शत्रु–मित्र सबसे ममत्व छोड़ना, ये मेरे नहीं हैं यहाँ तक कि शरीर भी सदा मेरे साथ रहने वाला नहीं है ऐसा अनासक्ति भाव उत्पन्न करना आकिंचन्य धर्म है।

जैन धर्म में आकिंचन धर्म को श्रेष्ठ धर्म बताया गया है। वर्तमान संदर्भ में देखें तो समाज में जितने भी दुर्गुण जैसे झगड़े, चोरी–डकैती, कालाबाज़ारी, चोर बाज़ारी आदि व्याप्त हैं उनका मुख्य कारण धन के प्रति अतृप्त लालसा है। यदि व्यक्ति पुराणों में वर्णित धर्म को धारण कर ले तो समाज में व्याप्त अधिकतम बुराइयों को समाप्त किया जा सकता है।

10. ब्रह्मचर्य

दीक्षाचार्य आदि के साथ सदा निवास करना ब्रह्मचर्य है। रागोत्पादक परिस्थितियों में भी मन को काम वेदना से विचलित न होने देना व उसे आत्मचिंतन में लगाये रखना ब्रह्मचर्य धर्म है। ब्रह्मचर्य व्रत से एड्स जैसी जान लेवा बीमारी पर काबू पाया जा सकता है। इन बीमारियों से बचने ओर बचाने के लिए जो अपार धनराशि खर्च की जा रही है उस धन को ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करने से बचाया जा सकता है। इस धर्म का पालन करने से आर्थिक व्यवस्थाएँ मज़बूत बनती हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. आचार्य कनकनन्दी जी : विश्व धर्म के दश लक्षण, प्रकाशक – धर्म दर्शन विज्ञान शोध संस्थान, बडौत, 20002. आचार्य कनकनन्दी जी : सत्यपरमेश्वर, प्रकाशक – धर्म दर्शन विज्ञान शोध संस्थान, बडौत, 20073. आचार्य कुन्दकुन्द : प्रवचनसार, सम्पादक व अनुवादक – डॉ. हुकुमचन्द भारिल्ल, प्रकाशक – पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर, 2008 4. आचार्य समन्तभद्र :त्नकरण्ड श्रावकाचार, टीकाकार – पं. सदासुखदास जी कासलीवाल, प्रकाशक – श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, अजमेर, 1998 5. आचार्य सूरि, सोमदेव : नीति वाक्यामृतम्, टीकाकर्त्री – आर्यिका विजयामती माताजी, प्रकाशक – श्री दिगम्बर जैन विजयाग्रन्थ प्रकाशन समिति, झोटवाड़ा, जयपुर, 1996,6. आर्यिका शान्तमती माता जी : स्वाध्याय, प्रकाशक – गजेन्द्र ग्रन्थमाला, दिल्ली, 2006 7. आर्यिका स्याद्वाद मती माता जी : मोक्षशास्त्र (टीका), प्रकाशक – भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत् परिषद्, लखनऊ, 2005 8. जैन, रमेश चन्द्र : जैन धर्म दर्शन, प्रकाशक – जैन अतिशय क्षेत्र मन्दिर संधी जी, सांगानेर, जयपुर 2006 9. भारिल्ल डॉ., हुकुमचन्द : धर्म के दश लक्षण, प्रकाशक – पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर 200110. मुनि सुधासागर जी : जिन्दगी का सच, प्रकाशक – भगवान् ऋषभदेव ग्रन्थमाला, जयपुर, 2007 11. मुनि सुधासागर जी : संस्कृति प्रहरी, प्रकाशक – भगवान् ऋषभदेव ग्रन्थमाला, जयपुर, 200312. मुनि समता सागर : विलक्षण है दशलक्षण, प्रकाशक – एस.के. कम्प्यूटर प्रिंटर्स प्रा.लि., जबलपुर (मध्यप्रदेश), 1996